डॉ० मिथिलेश कुमार
राजनीति विज्ञान विभाग

1st Paper कक्षा - B.A. I 'Hons'

दिनांक - 22.4.20

समय - 11.30 से 12.15

दबाव समूह

औपनिवेशिक काल में ही अपनी मांगों को पूरा करवाने एवं सुरक्षित करने के लिए विभिन्न वर्गों एवं हित समूह के द्वारा आन्दोलन किये गये जो कि उपनिवेशवाद विरोधी आन्दोलन के रूप में उभरे। मूलत: आरम्भ में कांग्रेस भी इसी प्रकार का एक समूह थी जो कि मध्यम वर्गों के लिए ब्रिटिश राज से विशिष्ट मांग रखा था जैसे- प्रशासनिक सेवा में नियुक्त होने वाले भारतीयों की संख्या में वृद्धि एवं भारतीय विद्यार्थियों के लिए इंग्लैंड में अधिक आरक्षण मिले। इस तरह भारत में दबाव समूहों का विकास एवं भूमिका महत्वपूर्ण रही है। आधुनिक समय में इनकी भूमिका को सही रूप में समझने के लिए विभिन्न समूहों के प्रकार एवं प्रकृति का विश्लेषण करना होगा।

दबाव समूहों के रूप

आमण्ड एवं पॉवेल ने हित समूहों को चार भागों में विभाजित किया है :-

(1) संस्थात्मक दबाव समूह
(2) औपचारिक दबाव समूह
(3) संगठित दबाव समूह
(4) असंगठित दबाव समूह

आज भारत में दबाव या हित समूह दो प्रकार के हैं :-

③

P.T.O.

(i) संगठित दबाव समूह—
जिनका उदय विशिष्ट व्यवसायिक हितों के लिए हुआ, तथा

(ii) असंगठित दबाव समूह—
व्यवसायिक क्षेत्रों से तथा समाज के आधुनिक क्षेत्रों से प्रकट होते हैं जैसे— व्यवसाय समूह, व्यापार संगठन तथा संघ, रोजगार संघ, किसान संगठन, इत्यादि। असंगठित समूह में धर्म, जाति, जन जाति या भाषा से जुड़े परम्परागत सामाजिक संघ पर आधारित समूह आते हैं।

इन सुसंगठित समूहों के अतिरिक्त ऐसे समूह भी हैं जो कि एक अकेले लक्ष्य को पाने का प्रयत्न करते हैं जिनका अस्तित्व अपने सामयिक उद्देश्यों को प्राप्त करने तक ही रहता है। इसके अलावा कुछ समूह समय-समय पर उदित होते रहते हैं तथा प्रेस के माध्यम से अपने कुछ निश्चित दावों की स्वीकृति के लिए प्रयत्न करते हैं। लेकिन सही मायने में वे संगठन का रूप नहीं ले पाते हैं। यह लाभ केन्द्रित व्यक्तिगत तालमेल है जो कि अनौपचारित समूह है। राजनीतिक प्रक्रिया की दृष्टि से संगठित या सहयोगात्मक समूह ही महत्वपूर्ण है।

भारत में मुख्य दबावगुट एवं अनौपचारिक संघ

भारत में कई प्रकार के दबाव समूह हैं। ये समूह देश की राजनीतिक संरचना का प्रतिनिधित्व करते हैं। उद्देश्य एवं हित की दृष्टि से भारत में दबावगुटों को निम्नलिखित वर्गों में विभाजित किया जा सकता है:—

क्रमशः।